सैन्धव कालीन मृदभांड

Harappan Pottery

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

P.G./ M.A. IV**th** **Semester ,**

Paper - Ancient Indian Potteries (E.C.)

Dept. of A.I.H.& Archaeology. Patna University, Patna

सिंधु सभ्यता के स्थलों पर उत्खनन से प्राप्त सामग्री में सर्वाधिक मृदभांड प्राप्त हुए हैं। ये अधिकतर खण्डित अवस्था में मिले हैं। समूचे भाण्डों की संख्या अत्यल्प है। सिंधु सभ्यता के मृदभांड अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं और इसके मृद्भाण्डों के कई मुख्य प्रकार दूसरी संस्कृतियों में अनुपलब्ध हैं। ये व्यावसायिक पैमाने पर उपयोगितावाद के दृष्टिकोण से निर्मित किये गये थे। इस सभ्यता के बर्तन अधिकतर चाक पर बने हैं। हाथ से बनाये बर्तन भी मिले हैं, किंतु चाक पर निर्मित बर्तनों की अपेक्षा इनकी संख्या बहुत कम है और ये मुख्य रूप से निम्न स्तरों से उपलब्ध हुए है। अतिम चरण में बर्तनों के निर्माण में ह्रास के लक्षण दिखते हैं। मृद्भाण्डों के निर्माण के लिए मिट्टी नदी से लायी गयी थी। उसमें अभ्रक और बालू भी मिली है ।

भाण्डों को भट्टे में भलीभांति पकाया गया था । सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता के बर्तनों में गोलाई अधिक है और सीधे कोने कम । मोहेंजोदड़ो के अन्तिम चरण में, जब सभ्यता हासोन्मुखी थी, नगर की सीमा में भी भट्ठे पाये गये हैं। विकसित युग में भट्ठे नगर से बाहर थे। ये उपलब्ध भट्ठे वृत्ताकार हैं और इनका व्यास 1.8 मीटर से 2.74 मीटर है। इनमें नीचे कोयला रखने के लिए प्रकोष्ठ था जिसे छेदवाली फशों से ढका गया था। फर्श के ऊपर सुखाए बर्तन रखते थे। नीचे आग जलाने पर छेदों के रास्ते तपन और लौ बर्तनों तक पहुंचती थी और वे पक जाते थे। उसके ऊपर गुम्बद था जिसमें छोटा भाग खुला छोड़ दिया गया था जिससे धुंआ निकल सके । इस तरह के भट्ठे पश्चिमी एशिया की प्राचीन संस्कृतियों में भी मिले हैं बर्तनों का ठीक तरह से पका होना इस बात का द्योतक है कि आंच भलीभांति नियंत्रित थी।

लेप : सिंधु सभ्यता के मृदभांड भली-भांति तैयार की गई मिट्टी से बने है। अधिकांश मृदभांड बिना चित्रण वाले हैं। उन पर हलका दूधिया रंग का लेप मिलता है। कुछ उदाहरणों में लेप का रंग पीलापन या सफेदी लिए हैं, और अत्यल्प उदाहरण गुलाबी लेप के भी हैं चित्रित बर्तनों की संख्या अपेक्षाकृत कम है और इनमें से अधिकांश खंडित मिले हैं। निचले स्तरों में ऊपरी स्तरों की अपेक्षा अधिक चित्रित बर्तन मिले हैं। चित्रित

तथा सादे दोनों ही मृदभांड एक ही तरह की मिट्टी से बने हैं। लेप को, विशेषतः गाढ़े लाल रंग के लेप को, पालिश कर चमकाया गया है।

चित्रण : चित्रण साधारणतया काले रंग से किया जाता था जो मेग्निफेरस हाइमेटाइट से तैयार किया जाता था। लाल लेप पर काले रंग से चित्रण की विधा की दृष्टि से इनके निर्माण की शैली उत्तरी बलूचिस्तान के रानाघुंडई तृतीय चरण से प्रभावित लगती है। किंतु जहां तक अभिप्रायों और डिजाइनों का प्रश्न है इनमें उत्तरी बलूचिस्तान का प्रभाव नगण्य है। । साधारणतया चित्रित मृदभांड के लगभग तीन चौथाई या उससे भी कम हिस्सों पर चित्रकारी की गई हैं। छोटे आकार के मृद्भाण्डों के मध्य में काले रंग से एक धारी या धारियां बना दी गई हैं। अधिकांश मृद्भाण्डों में चित्रण काले रंग से किया गया है । चित्रित अभिप्रायों में विविधता है और अधिकांश अलंकरण परंपरागत शैली में हैं। काले रंग की आड़ी धारियों का अंकन सबसे अधिक मिलता है । साधारणतया चित्रण के लिए बर्तन की बाहरी सतह को बड़े खण्डों में विभाजित कर लेते थे और फिर उन्हें खड़े और पड़े छोटे खण्डों में विभाजित करते थे। अभिप्रायों में प्रतिच्छेदी वृत्त विशेष उल्लेखनीय है ,तिकोन, शंकु, चेक डिजाइन ,जाली,मनकों का बार्डर,अर्धचन्द्र, अंदर की ओर मुड़े तिकोन, सीढ़ीदार तिकोन, वृक्ष के आकार का डिजाइन, लहरदार रेखाएं, लटकन, मत्स्य शल्क आदि भी उल्लेखनीय हैं। कुछ

अभिप्रायों पर छाया की गई है। कई बर्तनों पर वनस्पति चित्रित हैं । अधिकांशतया वनस्पति का चित्रण पारम्परिक शैली में है - पीपल,ताड़, नीम, केला, और बाजरा पहचाने जा सकते हैं। कुछ मृत्पात्रों पर मछली का चित्रण भी कुछ भाण्डों पर हैं । पक्षियों में मोर की आकृति कुछ बर्तनों पर मिलती हैं । पशुओं की आकृतियों का अंकन अधिक नहीं है कुछ मृदभांड खण्डों पर बड़े सींग वाले बकरे और हिरण का अंकन है । कुछ बर्तनों पर लेप को कंघी जैसी किसी वस्तु से हटाकर उसके नीचे के गहरे रंग के धरातल को दिखाया गया है।

सिधु सभ्यता में बहुरंगी चित्रण वाले भाण्ड बहुत कम मिले हैं, और जो हैं वे आकार में अपेक्षाकृत छोटे हैं। मोहेंजोदड़ो में जो थोड़े से बहुरंगी भाण्ड हैं, उन पर लाल और हरे रंग से पाण्डु सतह पर चित्र बनाये गये हैं। पीले रंग का प्रयोग बहुत कम हुआ है। चन्हुदड़ो से प्राप्त कुछ भाण्डों पर काले, सफेद और लाल रंग से पीले सतह पर पशु-पक्षी चित्रित किये गए हैं । बहुरंगी बर्तनों पर रंग कुछ धुंधले हैं जिससे लगता है। कि इन पर रंग पकाने के बाद ही किया गया होगा चित्रण के लिये काले और लाल रंग का प्रयोग तो कई प्राचीन संस्कृतियों में मिलता हैं किंतु बहुरंगी चित्रण वाले बर्तन बहुत कम मिलते हैं, केवल नाल (बलूचिस्तान) के कब्रिस्तान में ही बहुरंगी चित्रण वाले बर्तन काफी

संख्या में मिले हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि सिंधु सभ्यता के बहुरंगी चित्रण वाले बर्तन नाल संस्कृति के सम्पर्क के फल हैं।

ठप्पे एवं उत्कीर्ण अलंकरण : सिंधु सभ्यता के कुछ बर्तनों पर ठप्पे भी मिलते हैं। मोहेंजोदड़ो में तो ठप्पे लगे बर्तन बहुत कम संख्या में मिले हैं किंतु हड़प्पा में इस तरह के बर्तन काफी संख्या में मिले हैं । दाइमाबाद के कुछ भाण्डों पर सिंधु लिपि के अक्षरों के चित्रण और उनके उकेरे जाने के साक्ष्य हैं। अधिकांश ठप्पों पर सिंधु लिपि के चिह्न मिलते हैं जो शायद कुम्हारों के अथवा उनकी फर्मों के नाम हैं। कुछ पर ग्रैफिटी के चिह्न भी मिलते हैं। उत्कीर्ण अलंकरण वाले बर्तन बहुत कम हैं और इस तरह के अलंकरण गहरे बर्तन और साधारण तश्तरी पर ही मिलते हैं। कुछ पर प्रतिच्छेदी वृत्त अभिप्राय अंकित हैं जो कभी नाखून से और कभी सरकंडे से बनाया गया है।

भाण्डों का आकार – प्रकार : सिंधु सभ्यता के मृद्भाण्डों में आकार प्रकार की दृष्टि से पर्याप्त विविधता है। इस सभ्यता के प्रायः सभी स्थलों से साधार तश्तरियां बहुलता से पायी गयी है । इस तरह के बर्तन का ऊपरी भाग एक तश्तरी या प्याले जैसा तथा निचला भाग उलटी तुरही के समान हैं। कुछ का आधार लम्बा है और कुछ का छोटा। ये हड़प्पा तथा मोहेंजोदड़ो में सभी स्तरों में मिलती हैं । भारत में ही सिंधु सभ्यता से इतर ताम्राश्म पात्रों से मिलती जुलती आकृति वाले बर्तनों के

उदाहरण संस्कृतियों में भी इस तरह पाये गये हैं। हत्थेदार मृद्भाण्डों के उदाहरण हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो, दोनों से कम ही प्राप्त हुए हैं। केवल बहुत छोटे आकार के प्यालों पर,जिनका उपयोग बच्चों को दूध और अन्य तरल पदार्थ पिलाने के लिए होता रहा होगा।